मिलइ जो संत होइँ अनुकूला

श्री जगत प्रकाश पालीवाल, दिल्ली।

हनुमान जी जब पर्वत लेकर लौटते हैं तो भगवान से कहते हैं, प्रभु आपने मुझे संजीवनी बूटी लेने नहीं भेजा था। आपने तो मुझे संत के दर्शन करने के लिए भेजा था –

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू॥

(1/26/6)

हनुमान जी ने पवित्र राम नाम का जप करके श्रीराम जी को अपने वश में कर रखा है, प्रभु आज मेरा यह भ्रम टूट गया कि मैं ही सबसे बड़ा राम भक्त, राम नाम का जप करने वाला हूँ।

भगवान बोले कैसे?

हनुमान जी बोले – वास्तव में तो 'भरत जी संत हैं' और उन्होंने ही राम नाम जपा है। आपको पता है जब लक्ष्मण जी को शक्ति लगी तो मैं संजीवनी लेने गया, पर जब मुझे भरत जी ने बाण मारा और मैं भू पर गिरने से मूर्छित हो गया, तो भरत जी ने न तो संजीवनी मँगाई, न वैद्य बुलाया। कितना भरोसा है उन्हें आपके नाम पर, आपको पता है उन्होंने क्या किया –

जौं मोरें मन बच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया॥
तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला। जौं मो पर रघुपति अनुकूला॥
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा। कहि जय जयति कोसलाधीसा॥

(6/59/6–8)

यदि मन, वचन और शरीर से श्रीराम जी के चरण कमलों में मेरा निष्कपट प्रेम हो और यदि रघुनाथ जी मुझ पर प्रसन्न हों तो यह वानर थकावट और पीड़ा से रहित हो जाए।

यह वचन सुनते हुए मैं **श्रीराम जय राम, जय-जय राम** कहता हुआ उठ बैठा। मैं नाम तो लेता हूँ, पर भरोसा भरत जी जैसा नहीं किया, वरना मैं संजीवनी लेने क्यों जाता?

बस ऐसा ही हम करते हैं। हम नाम तो भगवान का लेते हैं, पर भरोसा नहीं करते, बुढ़ापे में बेटा ही सेवा करेगा, बेटे ने नहीं की तो क्या होगा? उस समय हम भूल जाते हैं कि जिस भगवान का नाम हम जप रहे हैं वे हैं न, पर हम भरोसा नहीं करते। बेटा सेवा करे न करे, पर भरोसा हम उसी पर करते हैं।

दूसरी बात प्रभु!

बाण लगते ही मैं गिरा, पर्वत नहीं गिरा, क्योंकि पर्वत तो आप उठाये हुए थे और मैं अभिमान कर रहा था कि मैं उठाये हुए हूँ। मेरा दूसरा अभिमान टूट गया। इसी तरह हम भी यही सोच लेते हैं कि गृहस्थी के बोझ को मैं उठाये हुए हूँ।

फिर हनुमान जी कहते हैं – और एक बात प्रभु! आपके तरकस में भी ऐसा बाण नहीं है जैसे बाण भरत जी के पास हैं। आपने सुबाहु मारीच को बाण से बहुत दूर गिरा दिया, आपका बाण तो आपसे दूर गिरा देता है, पर भरत जी का बाण तो आपके चरणों में ला देता है। मुझे बाण पर बैठाकर आपके पास भेज देने की बात कह रहे थे भरत जी –

चढ़ु मम सायक सैल समेता। पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेता।।

(6 / 60 / 6)

भगवान बोले – हनुमान जब मैंने ताड़का को मारा और भी राक्षसों को मारा तो वे सब मर कर मुक्त होकर मेरे ही पास तो आये। इस पर हनुमान जी बोले प्रभु! आपका बाण तो मारने के बाद सबको आपके पास लाता है, पर भरत जी का बाण तो जिन्दा ही भगवान के पास ले आता है। भरत जी संत हैं और संत का बाण क्या है? 'संत का बाण है उसकी वाणी' लेकिन हम करते क्या हैं, हम संत वाणी को समझते तो हैं, पर उसका अनुपान (सेवन) अर्थात विश्वासपूर्वक पालन नहीं करते हैं। औषधि सेवन करने पर ही फायदा करती है। हनुमान जी को भरत जी ने पर्वत सहित अपने बाण पर बैठाने की बात कही तो उस समय हनुमान जी को थोड़ा अभिमान हो गया कि मेरे बोझ से बाण कैसे चलेगा? परन्तु जब उन्होंने रामचन्द्र जी के प्रभाव पर विचार किया तो वे भरत जी के चरणों की वंदना करके चले आये।

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना। मोरें भार चलिहि किमि बाना।।
राम प्रभाव बिचारि बहोरी। बंदि चरन कह कपि कर जोरी।।
तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत।।

(6 / 60 / 7–8 तथा 6 / 60 क)

इसी तरह हम भी कभी–कभी संतों पर संदेह करते हैं कि ये हमें कैसे भगवान तक पहुँचा देंगे? संत ही तो हैं जो हमें सोते से जगाते हैं जैसे भरत जी ने हनुमान जी को जगाया। संतों का मन, वचन, कर्म सब भगवान में लगा होता है। यदि हम उन पर भरोसा करें तो वे हमें हमारे बोझ सहित भगवान के चरणों तक पहुँचा देंगे। इसीलिए स्वयं भगवान श्रीराम ने भक्ति–ज्ञान–वैराग्य का उपदेश देते हुए पंचवटी में लक्ष्मण जी को समझाते हुए कहा है कि –

भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला।।

(3 / 16 / 4)

जो निभा दे साथ जितना, उस साथ का भी शुक्रिया। छोड़ दे जो बीच में, उस हाथ का भी शुक्रिया।

दुलह राम, सिय दुलहिन

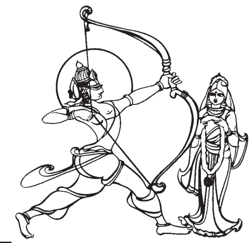

श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद, वाराणसी, फोन : 9451050750

हिन्दू धर्म में श्रीरामचरितमानस को एक पुस्तक के रूप में ही पहचान नहीं मिली है, अपितु यह गोस्वामी जी की **'मानस हमारी संस्कृति'** हमारी पहचान को दर्शाता है। श्रीरामचरितमानस को पढ़ते जाएँ तो ऐसा लगता है कि मानव जीवन चरितार्थ हो रहा है। जिस पात्र को जैसा रूप गोस्वामी तुलसीदास ने दिया वैसा ही रूप हमारी संस्कृति व हमारे धर्म में निहित है। गोस्वामी जी के मानस में व्याकरण का पूर्ण रूप से उल्लेख मिलता है चाहे वह अलंकार हो या रस हो या अन्य किसी प्रकार का काव्य व्याकरण हो। श्रीराम जी के विवाह और मानव रूपी श्रीराम एवं माता सीता के प्रेम प्रसंग को गोस्वामी जी ने कितने अद्भुत रूप में दर्शाया है कि वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि ये दोनों ईश्वर के अवतार ही नहीं, अपितु एक मानव की भाँति व्यवहार कर रहे हैं तथा एक आदर्श उपस्थित कर रहे हैं।

यहाँ पर तुलसीदास ने सीता स्वयंवर का उल्लेख श्रृंगार रस में व्यक्त किया है। महर्षि विश्वामित्र को जब यह सूचना मिली कि राजा जनक जी सीता स्वयंवर कर रहे हैं तो उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण को साथ लेकर जनकपुर के लिए प्रस्थान किया। जनकपुर पहुँचने पर श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ की शोभा देखते ही रहे गये। पुष्प–वाटिका बाग, वन जिसमें बहुत से पक्षियों का निवास है फल–फूल से नगर को सुशोभित कर रहे हैं और भौंरे गुँजार कर रहे हैं। शीतल व सुगन्धित मन्द वायु बह रही है –

बनइ न बरनत नगर निकाई। जहाँ जाइ मन तहँइँ लोभाई॥
चारु बजारु बिचित्र अँबारी। मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी॥

(1 / 213 / 1)

नगर की सौन्दर्यता का वर्णन करते नहीं बनता जहाँ–जहाँ नजर जाती है, वहीं वहीं मन लुभाता अर्थात सब कुछ सुन्दरता से भी अधिक सुन्दर लगता है। सुन्दर बाजार हैं, मणियों से बने विविध छज्जे हैं, मानो ब्रह्मा जी ने उन्हें अपने हाथों से बनाया है। कुबेर के समान धनी व्यापारी हैं। सुन्दर चौराहे, सुहावनी गलियाँ सदैव सुगन्धित रहती हैं। सबका घर मंगलमय है मानो कामदेव रूपी चित्रकार ने सबके घरों पर चित्र अंकित किए हैं।

राजा जनकजी का निवास स्थान अत्यन्त अनुपम है। उनके महल को देखकर देवता भी स्तम्भित हो जाते हैं। सभी ओर सुन्दरता बिखर रही है। सीताजी का महल तो अलौकिक है। उसका वर्णन तो किया ही नहीं जा सकता है। विश्वामित्र जी दोनों राजकुमारों के साथ जनकपुर पहुँचे। उनका आगमन सुनकर राजा जनकजी मंत्री, बहुत से योद्धा, श्रेष्ठ ब्राह्मण गुरु (शतानन्द) तथा अन्य श्रेष्ठ लोगों को लेकर मुनियों के

स्वामी विश्वामित्र जी से मिलने पहुँच गये और उनका बड़ा आदर सत्कार किया। जनकजी तो श्रीराम और लक्ष्मण को निहारते ही रह गए।

राजा जनक ने विश्वामित्र जी से उनका परिचय पाया और विश्वामित्र ने बताया कि ये दोनों बालक रघुकुल मणि महाराज दशरथ के पुत्र हैं। राजा ने मेरे हित के लिए इन दोनों राजकुमारों को मेरे साथ भेजा है। ये दोनों भाई राजकुमार बड़े बलवान हैं। सम्पूर्ण विश्व साक्षी है कि इन्होंने युद्ध में असुरों को जीतकर मेरे यज्ञ की रक्षा की है। जनकजी उन लोगों को आदर पूर्वक अपने नगर में ले आए और एक बड़ा ही सुन्दर महल जो सभी ऋतुओं में सुखदायक था, वहाँ उनको ठहराया। सब प्रकार से पूजा और सेवा सत्कार करके राजा जनक जी विदा माँग कर गए –

जाइ देखि आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ।
करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन दिखाइ॥

(1 / 218)

सुख के निधान दोनों भाइयों को मुनिवर की ओर से आज्ञा प्राप्त हुई कि जाकर नगर देख आओ। सम्पूर्ण नगर वासी श्रीराम व लक्ष्मण को देखकर बड़े प्रसन्न हुए और देखते ही रह गये मानो उन्होंने पृथ्वी पर करोड़ों कामदेवों की छवि जीत ली है। इनके अंग–अंग पर करोड़ों–अरबों कामदेवों को न्योछावर करना चाहिए –

भगति हेतु सोइ दीनदयाला। चितवत चकित धनुष मखसाला॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलंबु त्रास मन माहीं॥

(1 / 225 / 5–6)

तुलसीदास जी कहते हैं कि दीनों पर दया करने वाले श्रीराम जी भक्ति भाव के कारण धनुष यज्ञशाला को चकित होकर देख रहे हैं। यहाँ पर गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान राम को एक सत्यनिष्ठ शिष्य के रूप में दर्शाया है। जिस प्रकार हम सबके अन्दर लज्जा, शौर्य, भय, चिन्ता आदि निहित हैं, उसी प्रकार श्रीराम के अन्दर भी ये सभी गुण दर्शाए हैं। मन ही मन उन्हें यह भय सता रहा था कि गुरु जी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। प्रातःकाल होते ही श्रीराम व लक्ष्मण गुरु जी की पूजा हेतु पुष्प लेने के लिए 'पुष्प वाटिका' जाते हैं –

मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनि सोपान बिचित्र बनावा॥
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा। जलखग कूजत गुंजत भृंगा॥

(1 / 227 / 7–8)

जनकपुर अत्यन्त सुन्दर नगर है। बाग के बीच में सुहावना व सुन्दर सरोवर सुशोभित है। मणियों की सीढ़ियाँ विचित्र ढंग से बनी हुई हैं। सरोवर का जल निर्मल व स्वच्छ है, जिसमें अनेक रंगों के कमल खिले हुए हैं और पक्षी कलरव कर रहे हैं। भौंरे गुंजायमान हैं और ऐसे ही समय में माता पार्वती की पूजा करने हेतु सीताजी वहाँ आईं, उनके साथ सखियाँ मनोहर गीत गा रही हैं।

एक सखी सीताजी का साथ छोड़कर फुलवारी देखने चली गयी, वहाँ पर उसने श्रीराम और लक्ष्मण दोनों भाइयों को देखा और देखते ही मंत्रमुग्ध हो गयी। वह वापस आयी और अत्यन्त प्रसन्न होकर सीताजी व अन्य सखियों से दोनों भाइयों की सुन्दरता का वर्णन करते अघाते नहीं बन रहा था। उसने सीताजी को बताया कि एक भाई सांवले और दूसरे गौरे रंग के हैं। उनके सौन्दर्य का वर्णन नहीं किया जा सकता है क्योंकि –

स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी।।

(1/229/2)

यहाँ पर गोस्वामी तुलसीदास जी श्रृंगार रस का अतुलनीय वर्णन करते हैं। जब सखी ने दोनों भाइयों की सुन्दरता का वर्णन किया, तो सीताजी सखियों के साथ उन्हें देखने हेतु उधर गईं –

अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भये नयन चकोरा।
भये बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल।।

(1/230/3–4)

श्रीराम जी ने जब सीताजी को देखा तो उनके चन्द्रमुख को निहारने के लिए नेत्र चकोर बन गये। सुन्दर कमल नयन स्थिर हो गये और टकटकी लग गयी मानो जानकी के पूर्वज 'निमि' ने, जिनका सबकी पलकों पर निवास माना गया है, बेटी–दामाद के मिलन प्रसंग को देखना उचित नहीं समझा, इस भाव से सकुचाकर पलकों में रहना छोड़ दिया और पलकों का गिरना रुक गया –

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि।।

(1/230)

श्रीराम जी सीताजी की सुन्दरता को देखकर सोचते हैं कि किससे उपमा दूँ। हृदय में सीताजी की शोभा का वर्णन करके और अपनी दशा का विचार करके प्रभु श्रीराम ने पवित्र मन से अपने अनुज लक्ष्मण से समयानुकूल वचन कहे कि ये वही जनक पुत्री है, जिसके लिए धनुष यज्ञ हो रहा है। सखियाँ गौरी पूजन हेतु इन्हें यहाँ लायीं और ये अपने दिव्य अलौकिक प्रकाश से इस बगीचे को सुशोभित कर रही हैं। मेरा तो दाहिना अंग फड़क रहा है। तुलसीदास ने यहाँ इस तथ्य की व्याख्या की कि पुरुष का दाहिना अंग फड़कना शुभ माना जाता है। इधर सीताजी की प्रेम दशा को श्रीरामचरितमानस में मानवीय नैतिक मूल्यों के अनुसार ही रचित किया। वे फुलवारी में श्रीराम और लक्ष्मण को देखते ही चकित हो गयीं –

लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।।
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सुकुचानी।।

(1/232/7–8)

चतुरशिरोमणि सीताजी ने नेत्रों के रास्ते श्रीराम जी को हृदय में लाकर पलकों के किवाड़ लगा दिये। जब सखियों ने सीताजी को प्रेम के वश में जाना, तब वे मन में सकुचा गयीं और कुछ कह न पायीं। इस अद्‌भुत लीला और प्रेम प्रसंग का फुलवारी में तुलसीदास जी ने मर्यादापूर्वक वर्णन किया है –

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति।।
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी।।
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतीं लिखि लीन्ही।।

(1 / 235 / 1–3)

सीताजी अन्दर ही अन्दर चिन्ता करती हुई श्रीरामजी की साँवली मनोहर मूर्ति को हृदय में धारण करके चली जाती हैं। शिवजी के धनुष की कठोरता का स्मरण आते ही उन्हें चिन्ता हुई कि ये सुकुमार रघुनन्दन जी धनुष पर कैसे प्रत्यञ्चा चढ़ायेंगे? पिता के प्रण की स्मृति से उनके हृदय में क्षोभ था, इसलिए मन ही मन विलाप करने लगीं। प्रेमवश ऐश्वर्य की विस्मृति हो जाने से ही ऐसा हुआ, पर भगवान के बल का स्मरण कर हर्षित हो गयीं। श्रीराम ने जब सुख स्नेह, शोभा और गुणों की खान जानकी को जाते हुए जाना तो उनका स्वरूप अपने चित्त में धारण कर लिया और इधर सीताजी माँ पार्वती की पुनः पूजा करने हेतु चली गयीं –

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी।।
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता।।
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें।।
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं।।

(1 / 235 / 5–6 एवं 236 / 3–4)

गौरी जी का पूजन करके और उनका आशीर्वाद प्राप्त करके हर्षित मन से सीताजी अपने महल में लौट आयीं। स्वयंवर वाले दिन विश्वामित्र जी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण जी भी गये। वहाँ दोनों भाइयों और मुनि को जनक जी ने उचित आसन दिया। सभी देशों के राजा उस स्वयंवर में विराजमान थे, परन्तु राजकुमार राम को देख कर सभी डर गये। महान रणधीर श्रीराम को ऐसा देख रहे थे कि मानो स्वयं वीर रस धारण किए हुए हो। नगरवासियों का तो मानो श्रीरामजी ने चित्त ही चुरा लिया –

राजत राम समाज महुँ कोसलराज किसोर।
सुंदर स्यामल गौर तन बिस्व बिलोचन चोर।।

(1 / 242)

यहाँ पर तुलसीदास जी ने श्रीराम को साधारण व्यक्तित्व नहीं, अपितु मानव समाज में श्रेष्ठता की मान्यता दी। सुन्दर साँवले और गौरे शरीर वाले तथा विश्वभर के नेत्रों को चुराने वाले कौसलाधीश के कुमार राजाओं के समाज में सुशोभित हो रहे हैं। दोनों राजकुमारों की सुन्दरता का वर्णन कर पाना असम्भव सा प्रतीत होता है। महाकवि तुलसीदास ने जो भी वर्णन किया, वह अतुलनीय है।

शिवजी के विशाल धनुष को बिना तोड़े ही सीताजी श्रीराम के गले में जयमाला डाल देंगी, ऐसा सोचकर सभी राजा हताश होकर देख रहे थे। कुछ राजा तो श्रीराम के दर्शन पाकर ही धन्य हो गये और कुछ गर्व से अभिभूत थे। स्वयंवर प्रारम्भ होने के लिए सभी राजा प्रतीक्षा कर रहे थे। समय अनुकूल जानकर जनकजी ने सीताजी को बुलाया। रूप व गुणों की खान जगजननी जानकी की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता। काव्य की सारी उपमाएँ तुच्छ लगती हैं अर्थात जगत में ऐसी सुन्दर युवती अन्य कोई है ही नहीं। जब सुन्दरता और सुख की मूल लक्ष्मी उत्पन्न हो तो भी कवि लोग बहुत ही संकोच के साथ सीताजी के समान कहेंगे।

सीताजी सखियों के संग रंग भूमि में जब आयीं तो सभी लोग चकित होकर देखने लगे। देवता भी पुष्पवर्षा करने लगे। धनुष यज्ञ प्रारम्भ होते ही अन्य देशों के राजा एक–एक करके धनुष के पास जाते, पर हिला भी नहीं पाते। कितने राजाओं को धनुष को छूते ही पसीने छूटने लगे और लज्जावश सिर नीचे झुकाकर चले जाते। सारे राजाओं ने हार स्वीकार कर ली। जनकजी भी पछता रहे थे कि मैंने यह कैसा प्रण किया अब क्या होगा? गुरु विश्वामित्र की आज्ञा पाकर प्रभु श्रीराम अपने आसन से उठे और धनुष की ओर बढ़े। इधर सीताजी मन ही मन प्रार्थना करने लगीं कि हे महेश–भवानी मुझ पर प्रसन्न होइए। मैंने आपकी जो सेवा की है उसे सफल कीजिए। मुझ पर स्नेह करके धनुष के भारीपन को हटा लीजिए। सीताजी प्रार्थना करते हुए मन में धैर्य धारण करते हुए विश्वास रखती हैं कि यदि तन–मन और वचन से मेरा प्रण सच्चा है और श्री रघुनाथ जी के चरण कमलों में मेरा चित्त वास्तव में अनुरक्त हो गया है तो श्रीराम जी धनुष भंग अवश्य करेंगे –

तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी।।
जेहि कें जेहिं पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।

(1 / 259)

सबके हृदय में निवास करने वाले भगवान मुझे रघुश्रेष्ठ श्रीराम जी की दासी अवश्य बनायेंगे। जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे अवश्य मिलता है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। यहाँ पर गोस्वामी जी श्री लक्ष्मण जी के भ्रातृ प्रेम को अत्यन्त प्रेमवश, भाव विभोर होकर निभाते हैं। जब श्रीरामचंद्र जी धनुष के पास पहुँचे तो लक्ष्मण जी बोले– हे दिग्गजो, हे कच्छप, हे शेष, हे बाराह! धीरज रखकर पृथ्वी को थामे रहें। यह हिलने न पाये। श्रीरामचन्द्र जी शिवजी के धनुष को तोड़ना चाहते हैं, अतः मेरी आज्ञा सुनकर सब सावधान सचेत हो जाओ –

गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा।।
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ।।
लेत चढ़ावत खैंचत गाढें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़े।।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

(1 / 261 / 5–8)

श्रीराम जी ने कब धनुष चढ़ाया, कब खींचा, कब धनुष को बीच से तोड़ा, किसी ने देखा तक नहीं। यह सब क्षण भर में हुआ। भयंकर कठोर ध्वनि से लोक भर गए। चहुँ ओर से 'श्रीरामचन्द्र की जय' का उद्घोष होने लगा। ब्रह्मा आदि देवता, सिद्ध और मुनीश्वर लोग प्रभु की प्रशंसा कर रहे हैं। इस शुभ अवसर पर आशीर्वाद दे रहे और रंग–बिरंगे पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं। किन्नर लोग रसीले मंगल गीत गा रहे हैं। तब शतानन्द जी ने आज्ञा दी और सीताजी रामचन्द्र जी के पास जाने लगीं –

संग सखीं सुंदर चतुर गावहिं मंगलचार।
गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार॥

(1/263)

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसें। छबिगन मध्य महाछबि जैसें॥
कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई॥
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला॥
गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली॥

(1/264/1–2 एवं 7–8)

सीताजी प्रेम के विवश होने से जयमाला पहना नहीं पा रही थीं। चतुर सखियों ने समझाया कि जयमाला पहनाओ। श्रीराम जी की मनोहर छवि को देखकर सखियाँ गीत गाने लगी। तब सीताजी ने श्रीरामचन्द्र जी के गले में जयमाला पहना दी –

सोहति सीय राम कै जोरी। छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी॥

(1/265/7)

श्रीसीता–राम जी की जोड़ी ऐसी सुशोभित हो रही है मानो सुन्दरता और श्रृंगार रस एकत्र हो गये हों। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सीताजी एवं श्रीरामचन्द्र जी के विवाह की संरचना अपने मानस में ऐसी वर्णित की है, जैसे पृथ्वी पर ही भगवान ने मानस रूप में विवाह रचा हो और वही लज्जा, वही संकोच, वही स्नेह विराजमान हो।

इस प्रकार से यदि श्रीरामचरितमानस के प्रत्येक प्रसंग की विवेचना की जाए तो यह स्पष्ट होगा कि हर एक पात्र को अपने स्थान पर उचित दर्शाया है। सीताजी की सखियों को चतुर सखी की उपमा दी है। श्रीरामचरितमानस को जहाँ एक ओर एक साधारण से साधारण व्यक्ति पढ़ सकता है और समझ सकता है वहीं दूसरा पक्ष यह है कि महाविद्वान भी इसके गूढ़ रहस्य को आसानी से नहीं समझ सकता। गोस्वामी जी ने कई अन्य काव्य भी लिखे, परन्तु 'मानस' की महिमा अप्रतिम है। इस लेख में श्रीसीताराम के विवाह की (जयमाल तक की) झाँकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मंजिलें आसान हो जाती हैं जब कोई 'अपना' अपनेपन से कहता है, तू चिंता मत कर सब ठीक हो जाएगा।

त्रिजटा नाम राक्षसी एका

पं0 रामनरेश तिवारी 'पिण्डीवासा, प्रयागराज–211006। फोन : 9413443173

पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस के द्वारा जो जीवन–आचरण लघु पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, वह अमूल्य है। आज का समाज यदि उसका अंश मात्र भी अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करे तो वह परिवार–समाज को एक आदर्श रूप दे सकता है। आज हम लोग विज्ञान के भौतिकवादी युग में अपनी भारतीय संस्कृति के मूल स्वरूप को समझने में असमर्थ हो रहे हैं। भौतिकवादी होना बुरी बात नहीं है, लेकिन उसकी अतिवादिता की ओर बढ़ना स्वयं को विष पिलाने जैसा ही है। गोस्वामी जी के द्वारा 'मानस' के माध्यम से त्रिजटा–सीता सम्वाद के रूप में जो वर्णन आया है, वह उसके राक्षसी होने पर भी उसका सकारात्मक चरित्र दर्शाता है –

त्रिजटा नाम राक्षसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका।।

(5/11/1)

पहली बात, वह राक्षसी है, दूसरी श्रीराम चरण अनुरागिनी है, तीसरी, व्यवहार निपुण है तथा चौथी विवेकशीला है। वह राक्षसी कुलोत्पन्न होते हुए भी कर्त्तव्य के धरातल पर वन्दनीय है, जिसके कारण वह भक्तिमयी सीता के लिए परामर्शदात्री और प्राणरक्षिका का कार्य करती है। सीताजी जब अपने जीवन से दुःखी होकर अपने शरीर का उत्सर्ग करना चाहती थीं, तब वही आदिशक्ति स्वरूपा सीताजी हाथ जोड़कर त्रिजटा से बोलीं– हे माता! तू मेरी विपत्ति की संगिनी है। जल्दी कोई ऐसा उपाय कर, जिससे मैं इस शरीर को छोड़ सकूँ। विरह असह्य हो चला है अब सहा नहीं जाता है। सीताजी के द्वारा त्रिजटा के लिए 'माता' शब्द का प्रयोग तीन बार हुआ है। त्रिजटा रावण की भ्रातृजा और विभीषण की पुत्री है। रावण की भ्रातृजा होने के कारण वह राक्षसी है, पर विभीषण की पुत्री होने के कारण उसमें रामभक्ति का होना स्वाभाविक है।

जिस प्रकार अबोध बच्चा अपनी माता से गलत चीज पाने के लिए हठ कर लेता है और माँ उसे पुचकार कर उसकी बलैया लेकर उसके पैर पकड़ कर समझाती है, उसी प्रकार त्रिजटा सीता के कठोर वचन सुनकर उनके चरण पकड़ कर उन्हें समझाती है और राम के प्रताप, बल तथा सुयश को सुनाती है।

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि।।
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी।।

(5/12/5–6)

सीताजी को विरहाकुल देख कर अशोक वृक्ष पर बैठे हनुमानजी को उनकी विपत्ति के निवारण का कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। तब वे माता त्रिजटा के द्वारा प्रस्तुत भूमिका को ही आगे बढ़ाते दिखते हैं –

रामचन्द्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा।।
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई।।

(5 / 13 / 5–6)

दानव प्रवृत्ति के लोगों का विश्वास दैहिक शक्ति में होता है तथा सन्मार्ग के कार्य से विरत करने में भय की उपादेयता अधिक होती है। रावण सीता को वशीभूत करने के लिए भय के द्वारा प्रभावित करने का आदेश देकर चला जाता है। राक्षसियों के द्वारा सीताजी को नाना प्रकार के भयंकर रूप बना–बना कर पीड़ित किया जाता है, जिसके कारण सीताजी को असहनीय दुःख होता है। राम चरणानुरागी त्रिजटा जो विवेकशीला है, वह राक्षसी मनोविज्ञान का सहारा लेते हुए एक भयानक स्वप्न समस्त राक्षसियों को सुनाती है और फिर कहती है– तुम सब यदि अपना भला चाहती हो तो सीताजी की सेवा करो। फिर वह बताती है– स्वप्न में मैंने देखा कि एक बन्दर लंका में आया है और राक्षसों की विशाल सेना को मार डालता है। इतना ही नहीं, सारी लंका को भस्मीभूत कर देता है। दूसरी ओर, रावण गधे पर सवार है सिर मुड़ा हुआ है तथा बीसों भुजाएँ कटी हुई हैं। अभी यह कार्य लंका में कार्यरूप में परिणत नहीं हुआ है। त्रिजटा के द्वारा स्वप्न की चर्चा से निशाचरियाँ भयाक्रान्त हो उठीं और त्रिजटा के कहने पर सभी जगतजननी जानकी के चरणों में आ गिरीं –

तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं।।

(5 / 11 / 8)

लंकाकाण्ड में त्रिजटा की भक्ति का एक उदाहरण दृष्टव्य है। लंका में राम–रावण युद्ध अपने अंतिम चरण में पहुँच चुका है और सीताजी अत्यन्त चिन्तित हैं कि प्रभु राम ने अभी तक रावण पर विजय नहीं प्राप्त की है। वह दुष्ट सिर कटने पर भी नहीं मर रहा, तब भक्तमति रामचरण में रत त्रिजटा सीताजी से कहती है–

तेही निसि सीता पहिं जाई। त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई।।
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी। सीता उर भइ त्रास घनेरी।।

(6 / 99 / 1–2)

तुम संशय का त्याग कर दो, क्योंकि रावण के हृदय में तुम्हारा वास और तुम्हारे हृदय में रामजी का निवास है और राम जी के हृदय में अनेक भुवन का वास है, अतः रावण के हृदय में बाण लगते ही वे सारे भुवन नष्ट हो जायेंगे। जब यह रावण को विस्मृति हो जाएगी तुम्हारी, तभी राम जी उसकी छाती में बाण मारेंगे। वचन सुनकर सीता जी के मन में अत्यन्त हर्ष और विषाद होता है –

कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी। उर सर लागत मरइ सुरारी।।
प्रभु ताते उर हतइ न तेही। एहि के हृदयँ बसति बैदेही।।

(6 / 99 / 12–13)

एहि के हृदयँ बस जानकी जानकी उर मम बास है।
मम उदर भुअन अनेक लागत बान सब कर नास है।।
सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा।
अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा।।

(6/99/छंद)

काटत सिर होइहि बिकल छुटि जाइहि तव ध्यान।
तब रावनहि हृदय महुँ मरिहहिं रामु सुजान।।

(6/99)

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित महाकाव्य श्रीरामचरितमानस के समस्त पात्रों के आचरण हमें पग–पग चलने, बैठने, जागने, बोलने आदि की यथोचित शिक्षा देते हैं। त्रिजटा राक्षसी के सात्त्विक आचरण से विपत्ति में पड़े हुए को सहारा देने की सब मानव समाज को शिक्षा लेनी चाहिए। इसी कारण गोस्वामी जी का ग्रन्थ **श्रीरामचरितमानस** सार्वकालिक है।

दैनिक जागरण, शनिवार 18 अगस्त 2018

तुलसी दास की जीवनी पर डाला प्रकाश

जागरण संवाददाता, नोएडा : सेक्टर-36 सी ब्लॉक स्थित श्रीराम मंदिर में शुक्रवार को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति व गीता रामायण समिति की ओर से तुलसी जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कथा व्यास आचार्य राघव किंकल ने बताया कि गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीराम को भक्तों के हृदय में उतार दिया। उन्होंने श्रीरामचरित मानस की रचना कर आमजन के जीवन को श्रीराम चरित्र का आधार और हनुमान का प्राणवंत किया। इस अवसर पर राघव किंकल ने तुलसी दास के जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका पूरा जीवन अध्यात्म से जुड़ा रहा है। जन्म के समय उनके मुंह में पूरे दांत होने के कारण उनके पिता ने उन्हें अशुभ समझकर त्याग दिया था। इस अवसर पर सेक्टर-31 के सर्व हितकारी शिक्षा निकेतन के छात्र-छात्राओं ने तुलसीदास के जीवन चरित्र पर प्रस्तुति दी साथ ही काव्य पाठ किया। इसके अलावा अन्य कई छात्राओं ने उनके लिखी धार्मिक ग्रंथ रामचरित मानस के दोहा को प्रस्तुत किया। पूर्व आईएएस अधिकारी गणेश शंकर त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को पुरस्कार दिए गए। इस कार्यक्रम में दिनेश शर्मा, देवेंद्र अवाना, भगवान दास, लीलूराम वर्मा, विनोद शर्मा, योगेंद्र पांडे सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सीखने में गुजारो तो किताब है जिन्दगी,
दिखावे में गुजारो तो बर्बाद है जिन्दगी,
तुलना में गुजारो तो पस्त है जिन्दगी,
दु:खी रहकर गुजारों तो त्रस्त है जिन्दगी,
खुश रहकर गुजारो तो मस्त है जिन्दगी।

लहजे में ''बदजुबानी'' चेहरे पर नकाब फिरते हैं।
जिनके खुद के बहीखाते बिगड़े हैं वे मेरा हिसाब लिये फिरते हैं।।

हनुमान चालीसा का दिनचर्या में महत्व

डॉ. रविन्द्र कुमार शर्मा, सचिव

अधिकांश लोगों की दिनचर्या हनुमान चालीसा के पाठ से शुरू होती है। हनुमान चालीसा में 40 चौपाइयाँ हैं, ये उस क्रम में लिखी गई हैं जो एक आम आदमी के जीवन की दिनचर्या का क्रम होता है। हम इससे अपने व्यवहार में कुशलता ला सकते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान चालीसा की रचना मानस से पूर्व की थी। हनुमान जी को गुरु बनाकर उन्होंने श्रीराम को पाने की शुरुआत की। अगर आप हनुमान चालीसा पढ़ते हैं तो यह आप को भीतरी शक्ति तो देगा ही पर यदि आप इसके अर्थ में छिपे जीवन के सूत्र समझ लें तो आपको जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिल सकती है। हनुमान चालीसा सनातन परम्परा में लिखा गया पहला चालीसा है। शेष सभी चालीसा इसके बाद ही लिखे गये।

हनुमान चालीसा में प्रारम्भ से अंत तक सफलता के कई सूत्र हैं। आइए जानते हैं; हनुमान चालीसा के सूत्रों को अपने आचरण में लाकर हम अपने जीवन में क्या क्या बदलाव ला सकते हैं।

सद्‌गुरु सम्मान

हनुमान चालीसा का प्रारम्भ गुरु वंदना से हुआ है –

1. गुरु का महत्व –

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।

तुलसी दास जी कहते हैं कि मैं अपने गुरु के चरणकमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके भगवान श्रीराम के यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को देने वाला है। गुरु का महत्व चालीसा के पहले दोहे की पहली पंक्ति में लिखा गया है। जीवन में गुरु नहीं हैं तो आपको कोई आगे नहीं बढ़ा सकता। गुरु ही आपको सही रास्ता दिखा सकते हैं। इसीलिये तुलसी दास ने लिखा है कि गुरु के चरणों की धूलि से मन के दर्पण को साफ करता हूँ। जीवन में गुरु का बहुत महत्व है। हमारे सर्वप्रथम गुरु माता पिता हैं।

समझने वाली बात यह है कि गुरु यानी अपने से बड़ों का सम्मान करना जरूरी है। अगर तरक्की की राह पर आगे बढ़ना है तो श्रद्धा भाव से बड़ों का सम्मान करें।

2. पहनावे का महत्व –

कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।

अर्थात् हनुमान जी के शरीर का रंग सोने की तरह चमकीला है, सुवेश यानी अच्छे वस्त्र पहने हैं, कानों में कुंडल हैं और बाल संवरे हुए हैं।

आज के दौर में तरक्की इस बात पर भी निर्भर करती है कि आप रहते और दिखते कैसे हैं। फर्स्ट इंप्रेशन अच्छा होना चाहिये। अगर आप बहुत गुणवान भी हैं, लेकिन अच्छे से नहीं रहते हैं तो ये बात आपके कैरियर को प्रभावित कर सकती है। इसलिये रहन सहन और पहनावा हमेशा अच्छा रखें।

3. मैनेजमेन्ट के सूत्र –

विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।

अर्थात् आप विद्वान हैं, गुणों की खान हैं, चतुर भी हैं। राम के काम करने के लिये सदैव आतुर रहते हैं। आज के दौर में एक अच्छी डिग्री होना बहुत जरूरी है, लेकिन हनुमान चालीसा कहता है कि सिर्फ डिग्री होने से आप सफल नहीं होंगे। विद्या हासिल करने के साथ साथ आपको अपने गुणों को भी बढ़ाना पड़ेगा और बुद्धि में चतुराई भी लानी होगी। हनुमान जी में तीनों गुण हैं वे विद्वान हैं, गुणी भी हैं और चतुर भी।

4. अच्छे श्रोता बनें –

प्रभु चरित सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।

अर्थात् आप रामचरित यानी राम की कथा सुनने के रसिया हैं। राम, लक्ष्मण और सीता तीनों ही आपके मन में वास करते हैं। कार्य सिद्ध करने के लिए वाक्पटुता ही पर्याप्त नहीं है, दूसरों की बातों को सुनने में भी आपको रस आना चाहिये। अच्छा श्रोता होना भी बहुत जरूरी है। अगर आपके पास सुनने की कला नहीं है तो आप कभी अच्छे मार्गदर्शक नहीं बन सकते।

उदाहरण स्वयं श्रीराम जी ने दिया है –

बेद पुरान बसिष्ट बखानहिं। सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं।।

(7/26/2)

5. परिस्थिति के अनुसार व्यवहार करना –

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।

अर्थात् आपने अशोक वाटिका में सीता को अपने छोटे रूप में दर्शन दिये और लंका जलाते समय आपने भयंकर रूप धारण किया। कब किस परिस्थिति में अपना व्यवहार कैसा रखना है, यह कला श्रीहनुमान जी से सीखी जा सकती है।

सीता जी से जब अशोक वाटिका में मिले तो उनके सामने छोटे वानर के रूप में मिले, वहीं जब उन्होंने संदेह व्यक्त किया तब पर्वताकार रूप धारण कर लिया। अक्सर लोग यह तय नहीं कर पाते हैं कि उन्हें कब किसके सामने कैसा दिखना है।

6. सलाहकार बनने की शिक्षा -

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना॥

अर्थात् विभीषण ने आपकी सलाह मानी, वे लंका के राजा बने ये सारी दुनिया जानती है।

हनुमान जी सीता की खोज में लंका गये तो वहाँ विभीषण से मिले। विभीषण को राम भक्त के रूप में देखकर उन्हें राम से मिलने की सलाह दे दी।

विभीषण ने भी उस सलाह को माना और रावण के मरने के बाद वे श्रीराम द्वारा लंका के राजा बनाए गये। किसको कहाँ क्या सलाह देनी चाहिये, इसकी समझ बहुत आवश्यक है। सही समय पर सही इंसान को दी गयी सलाह सिर्फ उसका ही लाभ नहीं करती, आपको भी कहीं न कहीं लाभ पहुँचाती है।

7. अटूट आत्म विश्वास -

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं॥

अर्थात् राम जी की अंगूठी अपने मुख में रखकर आपने समुद्र को लांघ लिया, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। अगर आप को खुद पर और अपने परमात्मा पर पूरा भरोसा है तो आप किसी भी मुश्किल से मुश्किल कार्य को आसानी से पूरा कर सकते हैं।

आज के युवाओं में एक कमी यह भी है कि उनका भरोसा बहुत जल्दी टूट जाता है। आत्मविश्वास की कमी इसका मुख्य कारण कहा जा सकता है। प्रतिस्पर्धा के दौर में आत्मविश्वास की कमी का होना सफलता में बाधक है। अपने आप पर पूरा भरोसा करें।

इस प्रकार से हनुमान चालीसा का पाठ करने एवं चिंतन करने से उपर्युक्त सद्‌गुण स्वतः आ जाएंगे, तब इहलोक और परलोक दोनों सुधर जायेंगे।

श्रीरामचरितमानस के कुछ रोचक तथ्य

1. **मानस में राम शब्द1443 बार आया**
2. **मानस में सीता शब्द 147 बार आया**
3. **मानस में जानकी शब्द 69 बार आया**
4. **मानस में बैदेही शब्द 51 बार आया**
5. **मानस में बड़भागी शब्द 58 बार आया**
6. **मानस में कोटि शब्द 125 बार आया**

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

स्थानीय कार्यालय, ए-447, सेक्टर-47, नोएडा-201 301
दूरभाष : 0120-4305457, 9811056467

वित्तीय वर्ष 2017 - 2018 का आय/व्यय विवरण (राशि भारतीय रुपयों में)

क्र.सं.	आय विवरण	रुपए	क्र.सं.	व्यय विवरण	रुपए
1.	वर्ष के प्रथम दिन की स्थिति		1.	स्मारिका छपाई व्यय	1,55,000.00
	(क) मियादी जमा खाता	2,20,000.00			
	(ख) बैंक में बचत खाता	83,312.50			
	(ग) नकद राशि	52,843.00			
2.	स्मारिका में विज्ञापन से प्राप्त राशि	1,35,000.00	2.	अग्रवाल मित्र मण्डल के पास सिक्योरिटी डिपोजिट	5,000.00
3.	दान/आरती/मानस पाठ तथा सदस्यता शुल्क से प्राप्त राशि	2,19,516.00	3.	श्रीरामनवमी उत्सव एवं श्रीराम कथा आयोजन पर व्यय	1,70,649.00
4.	बैंक ब्याज	3,013.00	4.	टेलीफोन बिलों का भुगतान	20,480.60
			5.	विविध व्यय (बैंक चार्ज सहित)	10,638.00
			6.	वर्ष के अंतिम दिन की स्थिति	
				(क) मियादी जमा खाता	2,70,000.00
				(ख) बैंक में चालू खाता	77,367.90
				(ग) नकद राशि	4,549.00
	कुल योग	7,13,684.50		कुल योग	7,13,684.50

दिनेश चन्द्र शर्मा	**भगवान दास पटैरया**	**जे.के. गुप्ता**	**चार्टड**
अध्यक्ष	महा सचिव	कोषाध्यक्ष	लेखाकार